



दिसम्बर 2017

वर्ष : 1 अंक : 3

सिफरी मासिक समाचार

मात्स्यिकी के गौरवशाली 70 वर्ष



मुख्य शोध उपलब्धियां

ताप्ती नदी में आवास आधारित प्लवक आंकलन से पता चला है कि नदी के पूल भाग में पादप प्लवक बहुतायत (25.77×10^3 प्रति माईक्रो ली०) अधिकतम है, इसके बाद स्टेप-पूल क्षेत्र में (4.98×10^3 प्रति माईक्रो ली०), रन भाग में (4.86×10^3 प्रति माईक्रो ली०) और बेड रॉक भाग में (2.54×10^3 प्रति माईक्रो ली०) और रिफल में बहुतायत (0.41×10^3 प्रति माईक्रो ली०) न्यूनतम पायी गयी जबकि जन्तुप्लवक बहुतायत स्टेप-पूल क्षेत्र में सबसे अधिक (1.08×10^3 सं०/प्रति ली०), दर्ज की गयी एवं पूल क्षेत्र (1.01×10^3 सं०/प्रति ली०) में पायी गयी।

प्री-स्पनिंग फिटनेस (के_{स्वॉन50}) जो थ्रेसहोल्ड कंडीशन फैक्टर (फल्टन) की अवधारणा पर आधारित है, जिसके ऊपर 50% से अधिक मादा मछली आबादी अंडा देने के लिए तैयार मानी जाती है को गैर-पैरामीट्रिक केपलन-मीयर विधि में सर्वाइवल फंक्शन में फिट करके अनुमान लगाया गया। प्रस्तावित के_{स्वॉन50} को मादा मिस्टस टेंगरा (1.13-1.21 इकाइयों), एम० केवासियस (0.846-0.945 इकाइयों), और ईट्रोपीचीथयस वाचा (0.716-0.799 इकाइयों) के लिए तैयार किया गया है।

अक्टूबर माह के दौरान गंगा के मध्य भाग में कुल 102 प्रजातियां, 68 वंश, 26 परिवारों और 10 ऑर्डर अन्तर्गत दर्ज की गयीं। बिजनौर मत्स्य लैडिंग सेंटर में सबसे ज्यादा मछली प्रजातियों (94) पायी गयीं, इसके उपरान्त नरोरा (76), कानपुर (62), इलाहाबाद (61), फर्रुखाबाद (60), वाराणसी (33), हरिद्वार (9) में दर्ज की गयीं।

प्रयोगशाला की परिस्थिति में सूक्ष्म शैवाल को ट्राईक्लोसेन (5 माइक्रो ग्राम/मिली ली०), के साथ 12 दिनों (प्रयोगात्मक अवधि) तक दिया (ट्रीट) गया। शैवाल की विषाक्त प्रतिक्रियाएं यह दर्शाती हैं कि कोशिका (सेल) की बहुतायत में कमी आती है। नियंत्रित पालन की तुलना में प्रयोगात्मक नमूनों में विकृतियां एवं

विषय सूची	पृष्ठ संख्या
क्षेत्रीय समिति (द्वितीय) की मध्यावधि समीक्षा बैठक	2
विश्व मात्स्यिकी दिवस का आयोजन	2
कौमी एकता सप्ताह	3
खाद्य एवं कृषि संगठन कार्यशाला का उद्घाटन	4
प्रशिक्षण कार्यक्रम	5
महत्वपूर्ण बैठके	6
गंगा नदी में मत्स्य संचय कार्यक्रम	6
अंतर्राष्ट्रीय सहयोग	7
आर टी पि सी आर और क्यू आर टी पि सी आर आधारित तिलपिया लेक वायरस पहचान किट	7
सतर्कता जागरूकता सप्ताह का समापन समारोह	7
खेल-कूद प्रतियोगिता	8
वित्तीय उन्नयन, स्थान्तरण, सेवानिवृत्ति,	8

कोशिका अपघटन देखा गया जैसे नीत्शिया प्रजाति और नेविकुला प्रजाति में क्लोरोप्लास्ट दानेदार बन रहे हैं, सेलेनसट्रम प्रजाति में आकार विरूपण हो रहा है और क्लोरेलिया वल्वारिस में उपकोशिका अपघटन हो रहा है।

- उत्तरी हिमालयी नदियों के लिए भौतिक डाटा बेस डिजाइन पूरा किया गया।



छत्तीसगढ़ राज्य के सरोड़ा सागर, चिरपनी और गोंडली जलाशयों में स्थापित पिंजरो का पंगास और मोनोसेक्स टिलिपिया में बीमारी संक्रमण के लिए सर्वेक्षण किया गया और पिंजरो में सम्बन्धित दवाओं का प्रयोग किया गया।

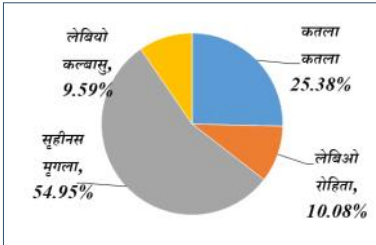
- हिमाचल प्रदेश के गोविंदसागर और पोंग जलाशय में एच० पी० पिंजरा पालन



परियोजना के अन्तर्गत एच०डी०पी०ई० पिंजरे (एच०डी० पी०ई० मॉड्यूलर: 6 मी०x4 मी०x4 मी०) में से पेंगासियानोडोन हाइपोप्लैण्डलस के लगभग 85 टन का उत्पादन स्तर के प्राप्त किया और उत्पादित मत्स्य हिमाचल प्रदेश मत्स्यकी विभाग को सौंप दिया गया है।

- उत्तर बंगाल क्षेत्र के झीलों में छोटे पैमाने पर मत्स्य पालन के टिकाऊ प्रबंधन के लिए कार्य योजना तैयार की गई है। इसके लिए तीस्ता-टोरसा बेसिन में स्थित कोच बिहार की दो आर्द्रभूमि नशेरुरा (क्षेत्रफल 62. हे०) और साहेबगंज (क्षेत्रफल : 23 हे०) के मछुआरों के साथ फील्ड सैपलिंग और संवादात्मक बैठक की गयी। कुल मिलाकर 330 मछुआरों की आय और आजीविका इन झीलों पर निर्भर हैं।

- अक्टूबर 2017 के दौरान गंगा नदी प्रणाली के इलाहाबाद खंड से कुल



अनुमानित मत्स्य प्रग्रहण 14.02 टन पाया गया है। इसमें विदेशी मत्स्य योगदान उच्चतम तत्पश्चात विविध समूह, आईएमसी और कैटफिश कमश: थे। भारतीय मेजर कार्प समूह में मृगला सबसे ज्यादा दर्ज किया गया।

- अक्टूबर, 2017 के दौरान संस्थान के इलाहाबाद केंद्र ने मॉन्सून के बाद 16 साइटों से जल, मिट्टी और जैविक नमूने एकत्र किए गए थे। इन नमूनों परीक्षण नमूने एकत्रित करने के



स्थान के साथ-साथ प्रयोगशाला में नमूनों का विश्लेषण किया गया। इसके अलावा प्रमुख आवास मापदंडों का भी अध्ययन किया गया। समग्र परिणाम बताते हैं कि जलीय जीवन की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए पानी की गुणवत्ता अच्छी है।

क्षेत्रीय समिति (द्वितीय) की मध्यावधि समीक्षा बैठक

भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसन्धान संस्थान बैरकपुर में 13 नवम्बर को क्षेत्रीय समिति -II की मध्यावधि



समीक्षा बैठक आयोजित की गयी। भा०कृ०अनु०प० क्षेत्रीय समिति (द्वितीय) में आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा, पश्चिम बंगाल राज्य और अंडमान निकोबार द्वीप समूह शामिल हैं जिनमें पशुधन और मत्स्य पालन सहित कृषि विकास की अपार क्षमता हैं। भाकृअनुप-क्षेत्रीय समिति-II की पिछली बैठक भाकृअनुप-राष्ट्रीय कृषि अनुसन्धान प्रबन्ध अकादमी, हैदराबाद, में 24-25 जून 2016 को हुई थी और उस बैठक में प्रस्तुत सुझावों की प्रगति की समीक्षा करने के लिए यह बैठक आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता डॉ० जे० के० जेना, उप महानिदेशक (मात्स्यकी विज्ञान) ने की। डॉ० जेना ने अपने संबोधन में कहा कि पिछले एक दशक से इस क्षेत्र के खाद्य उत्पादन के में काफी सुधार हुआ है, परन्तु दलहनों और तिलहनों के उत्पादन में अभी



भी कमी है। इसलिए, कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने और भारत सरकार के विजन के अनुसार 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने के लिए केंद्र, राज्य सरकार, गैर-सरकारी संगठनों और अन्य हितधारकों द्वारा इस क्षेत्र में एक मजबूत अनुसंधान, विकास और विस्तार कार्यक्रम हेतु ठोस प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया। इस बैठक में कुल 26 भाकृअनुप-संस्थान / क्षेत्रीय अनुसन्धान केंद्र, आठ विश्वविद्यालयों, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, ओडिशा, अंडमान और निकोबार द्वीप के विभिन्न राज्य विभागों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसन्धान संस्थान के निदेशक और क्षेत्रीय समिति-II के सदस्य सचिव ने बैठक में कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत किया। पिछले क्षेत्रीय समिति बैठक (2) के दौरान हैदराबाद में 35 कार्रवाई बिंदु बनाए गए थे। इस बैठक में इन कार्रवाई बिंदुओं, मुद्दों तथा कार्रवाई रिपोर्ट पर विस्तार से चर्चा की गई। डॉ० ए० विष्णुवर्धन रेड्डी, निदेशक, भाकृअनुप-भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान; डॉ० डी० आर० सिंह, निदेशक, भाकृअनुप-आर्किड अनुसन्धान केंद्र, डॉ० के० के० राउत, निदेशक, पी०एम०ई०, ओ०यू०ए०टी; डॉ० उत्पल कुमार सर, निदेशक, मात्स्यकी विभाग, अंडमान; डॉ० आर० एन० चटर्जी,

निदेशक, भाकृअनुप-कुक्कुट अनुसन्धान निदेशालय, हैदराबाद; डॉ. ए० कुंडु, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर; डॉ. एस०के० अम्बास्ट, निदेशक, भाकृअनुप-भारतीय जल प्रबंधन संस्थान,



भुवनेश्वर और अन्य संस्थानों और विश्वविद्यालयों के गणमान्य व्यक्तियों ने बैठक में भाग लिया।

विश्व मात्स्यकी दिवस का आयोजन

संस्थान ने 21 नवम्बर को संस्थान के मुख्यालय बैरकपुर में "विश्व मात्स्यकी दिवस" मनाया। इस अवसर पर, सिफरी तथा राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन परियोजना के तहत बैरकपुर के दासपारा घाट पर गंगा नदी में कुल 20,000 (बीस हजार) भारतीय प्रमुख कार्प के बीज प्रवाहित किए गये।

संस्थान में राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के अन्तर्गत चल रही परियोजना "गंगा नदी प्रणाली के उचित संरक्षण और उद्धार योजना के विकास के लिए, मत्स्य एवं मात्स्यकी का आंकलन" के अन्तर्गत संस्थान के सभागार में मात्स्यकी जागरूकता पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. सुमन कुमारी, वैज्ञानिक ने अपने उदबोधन में विश्व मात्स्यकी दिवस के महत्त्व को उजागर



किया। संस्थान के निदेशक और के०अं०मा०अनु०सं०-राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन परियोजना के प्रधान अन्वेषक डा० बि० के० दास ने विश्व मात्स्यकी दिवस के महत्त्व और राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन परियोजना के बारे में प्रकाश डालते हुए कहा कि खुला जल क्षेत्रों में स्थायी मत्स्य पालन, जलीय जैव विविधता का संरक्षण, मछली के आवास का पुनरुत्थान, गरीब मछुआरों की आजीविका में सुधार आदि इस परियोजना के उद्देश्य हैं। उन्होंने इस कार्यक्रम में उपस्थित स्थानीय मछुआरों को गंगा नदी की मत्स्य जैव विविधता में हास और गंगा नदी मत्स्य उत्पादन में हास के विभिन्न कारकों, जैसे कि ब्रूडर और किशोर मछलियों के अंधाधुंध विनाश, विनाशकारी मछरदानी जालों (गियर) से मछली पकड़ना आदि के बारे में बताया। निदेशक महोदय ने कहा कि उनके सक्रिय सहयोग से नदी मत्स्य संचयन (रेंचिंग) कार्यक्रम आगे चलेगा, जो 'ब्लू इकोनॉमी में ग्रीन फिश' पैदा कर सकती है। इससे नदियों के गरीब मछुआरों की आजीविका में सुधार होगा। प्रसिद्ध हिल्सा मात्स्यकी विशेषज्ञ, डॉ. डी०के०डे ने

बड़ी संख्या में बांधों / बांधों के निर्माण के बारे में प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इन बांधों / बांधों के निर्माण से जल का पृथक्करण हो रहा है और मछलियों के प्रवास में बाधा आई है। इसके अलावा उन्होंने ब्रूड मछलियों और किशोरों का अत्यधिक दोहन, नदी के मुहाने मुहानों पर रेत जमा होने सम्बन्धी मुद्दों के बारे में प्रकाश डाला और खुला जल क्षेत्रों के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए कहा। ज्वारनदमुख मात्स्यकी के विशेषज्ञ, डॉ. उत्पल भौमिक ने भी विवेकरहित दोहन, अति मत्स्य प्रसरण, मत्स्य आवास का विनाश आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की और कहा कि बड़ी संख्या में



गरीब मछुआरों की आजीविका दांव पर लगी है। उन्होंने संस्थान द्वारा गंगा नदी से एकत्र किये गए ब्रूडर का उपयोग कर मत्स्य बीज के उत्पादन की प्रशंसा की।

विख्यात जलकृषि विशेषज्ञ, डॉ. एम० एल० भौमिक ने कहा कि बंगाल में नदी में मत्स्य संचयन का उल्लेख श्रीद्वीनाथ टैगोर, के 'पल्ली मंगल' 'मीन मंगल' आदि रचनाओं में मिलता है। इसे 'बारशा मंगल' के माध्यम से वर्णित



किया गया है। डा० भौमिक ने गंगा नदी में भारतीय मेजर कार्प के स्टॉक को पुनरुत्थान के लिए संस्थान के वर्तमान प्रयासों की सराहना की। सभा के अंत में, डा० रंजन कुमार मन्ना ने "धन्यवाद ज्ञापन" के दौरान अपनी टिप्पणी में स्वच्छ गंगा मिशन परियोजना के उद्देश्यों पर चर्चा की और कहा कि संस्थान के प्रयासों से निश्चित रूप से गंगा नदी में भारतीय मेजर कार्प का स्टॉक पुनर्स्थापित होगा और सभागार में उपस्थित सभी मत्स्य बंधुओं से सक्रिय सहयोग देने के लिए अनुरोध किया।

कौमी एकता सप्ताह

नवम्बर 19-25, 2017 के दौरान संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के द्वारा मुख्यालय बैरकपुर में कौमी एकता (राष्ट्रीय एकता) सप्ताह मनाया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास के मार्गदर्शन में धर्मनिरपेक्षता, सांप्रदायिकता विरोधी और अहिंसा के ऊपर 19 नवंबर को सभी कर्मचारियों



के द्वारा प्रतिज्ञा ली गयी। इस दौरान 22 नवंबर को राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक सद्भाव की भावना को बढ़ाने और सुदृढ़ करने तथा लोगों को इसके प्रति संवेदनशील बनाने के लिए एक जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया। दिनांक 24 नवंबर 2017 को राष्ट्रीय अखंडता बनाए रखने के लिए और कर्मचारियों को इसके प्रति संवेदनशील बनाने के लिए पोस्टरों को संस्थान परिसर में विभिन्न स्थानों पर लगाया गया और सांप्रदायिक सौहार्द फलैग



दिवस मनाया गया। इस अवसर पर हिंसा से प्रभावित अनाथ और निराश्रित बच्चों के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक समर्थन के लिए स्वयंसेवकों द्वारा निधि जुटाने के लिए संस्थान में अभियान चलाया गया। इस अवसर पर, संस्थान के कर्मचारियों, शोध छात्रों और अन्य सभी कर्मचारियों के बीच संवेदीकरण और जागरूकता पैदा करने के लिए, भारतीय समाज में महिलाओं के सशक्तीकरण, सांप्रदायिक सद्भाव, भाषा, राष्ट्र भावना और सांस्कृतिक विविधता विषयों पर



चर्चा की गयी। इसमें संस्थान के स्टाफ सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और अपने विचार व्यक्त किये। कौमी एकता सप्ताह का समापन कार्यक्रम 25 नवंबर को किया गया। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण के साथ भारतीय संस्कृति, भाषा और पारंपरिक ज्ञान आदि को संरक्षित करने आदि विषयों पर चर्चा की गयी।

खाद्य एवं कृषि संगठन एवं भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसन्धान संस्थान कार्यशाला का उद्घाटन

29 नवम्बर 2017 को खाद्य एवं कृषि संगठन एवं भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसन्धान संस्थान की कार्यशाला "फिश पैसेज डिजाइन एट क्रॉस-रिवर ऑब्सटेकल्स - एक्सपीरियेन्स फ्रॉम डिफरेंट कन्ट्रीज, विथ पोटेन्शियल रिलेवन्स टू इंडिया" का उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि, डॉ. दिलीप कुमार तथा अन्य सम्मानित मेहमानों द्वारा द्वीप



प्रज्जवलन के साथ हुआ।

इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य फिश पैसेज (मछली मार्ग) से संबंधित विविध पहलू हैं, जैसे- विश्वभर में फिश पैसेज की सुविधाएं, भारत में फिश पैसेज की स्थिति, प्रवासी मछली प्रजातियों के व्यवहार एवं फिश पैसेज की संरचना और फिश पैसेज के प्रभाव का वर्तमान परिदृश्य। इसके अलावा, इस कार्यशाला में विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे, संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफ. ए. ओ., रोम), हाइड्रोलिक इंजीनियरिंग और पर्यावरण (जर्मनी) और



प्राकृतिक संसाधन और जीवन विज्ञान विश्वविद्यालय (ऑस्ट्रिया) में काम करने वाले बहु-विषयक विशेषज्ञों को एक साथ एक मंच पर लाना है। कार्यशाला प्रतिभागियों में एन.एच.पी.सी., एस. जे. वी. एन. एल., अरुण, राज्य जल संसाधन विभाग, गुजरात, केन्द्रीय जल आयोग, जल संसाधन मंत्रालय (एम.ओ डब्ल्यू. आर.) और पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अधिकारी थे।

डॉ. बि.के.दास, निदेशक भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसन्धान संस्थान ने अपने संबोधन में मुख्य अतिथि और अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। उन्होंने मछलियों और अन्य जलीय प्रजातियों को नदियों में बाधा मुक्त मार्ग बहाल करने के बढ़ते महत्व पर जोर दिया। नदी की बाधाओं (बांधों की दीवार) को पार करने के लिए मत्स्य मार्ग निर्माण ऐसी



संरचनाएं जलीय जीव की ऊर्ध्वमुखी नदी यात्रा संभव बनाने का एकमात्र तरीका है। इस प्रकार बहते पानी की पारिस्थितिकीय सुधार के लिए मत्स्य मार्ग सुधार की महत्वपूर्ण भूमिका हैं। उन्होंने जोर दिया कि संस्थागत और राजनीतिक इच्छा ही केवल मत्स्य मार्ग के निर्माण को सफल बना पायेगी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह कार्यशाला मत्स्य मार्ग के रचना (डिजाइन) पर एक दिशानिर्देश प्रदान



करेगी।

डॉ० जी० मर्मुला, मत्स्य संसाधन अधिकारी, खाद्य और कृषि संगठन ने अपने संबोधन में कहा कि भारत जैवविविधता से समृद्ध देश है और देश में से एक यहाँ 900 से अधिक मीठा जल मत्स्य प्रजातियाँ हैं। उनमें से सबसे महत्वपूर्ण हिल्सा मछली है। कई मछली प्रजातियों की शारीरिक आवश्यकताएँ जैसे उत्पादकता, प्रजनन, मौसमी निवास, स्थान परिवर्तन और अन्य गतिविधियों के लिए लंबी दूरी का प्रवास ही उनकी जीवन-रेखा है। बहुउद्देशीय बांध परियोजनाएँ जैसे सिंचाई, पनबिजली उत्पादन आदि ने प्रवासी मछली प्रजातियों के मुक्त प्रवास को बाधित किया है। केवल मत्स्य संचयन एक व्यवहारिक विकल्प नहीं है और यह लंबे समय तक मछली की प्राकृतिक प्रजनन को प्रतिस्थापित नहीं करेगा। यह कार्यशाला नए



बांधों के निर्माण के दौरान मत्स्य मार्ग के डिजाइन के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद करेगी।

ओडीशा सरकार के पूर्व इंजीनियर-इन-चीफ एवं खाद्य एवं कृषि संगठन विशेषज्ञ सलाहकार और सम्मानित अतिथि, डा०बी०पी० दास, ने अपने भाषण में दुनिया के विभिन्न हिस्सों में निर्मित विभिन्न मत्स्य मार्गों का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि 1960-90 के दौरान हमारा जोर बहु-उद्देशीय बांध परियोजनाओं से बिजली पैदा करने और सिंचाई पर अधिक था। 80 के दशक में, अमेरिका में मिसौरी और अन्य नदियों में मत्स्य पालन की कमी के बाद, मछली के पार्श्व प्रवास के लिए मत्स्य मार्ग और मछली नहरों की अवधारणा शुरू की गई। मत्स्य नहर मत्स्य मार्ग के रूप में मत्स्य प्रवासन को



सक्षम बनाती है। उन्होंने कहा कि तीन दिनों की यह कार्यशाला नदियों के मत्स्य जीवन ज्ञान को बढ़ाने में बेहद मदद करेगी।

भाकृअनुप-केन्द्रीय मत्स्य पालन शिक्षा संस्थान, के पूर्व निदेशक और कुलपति डॉ०दिलीप कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि मैं अपने आप को बहुत भाग्यशाली मानता हूँ, कि मुझे कई वर्षों तक केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसन्धान संस्थान और खाद्य एवं कृषि संगठन संगठनों के साथ काम करने का मौका मिला। उन्होंने बताया कि खाद्य एवं कृषि संगठन का अनुभव मत्स्य मार्ग डिजाइन और नए बांधों के निर्माण के दौरान मत्स्य मार्ग निर्माण में बेहद मददगार साबित होगा। तकनीकी मार्गदर्शन के बावजूद पहले के अवसरों में विफलता के पीछे मुख्य समस्याओं में से एक संस्थागत था। मत्स्य मार्ग निर्माण कार्य को सफल करने के लिए विभिन्न सरकारों विभागों के बीच साझेदारी और सहयोग बेहद जरूरी है। इस कार्यशाला की सिफारिश विभिन्न नीतिगत बाधाओं को दूर करने में सहायक होगी। सभा के अंत में डॉ०ए०के०साहू, कार्यशाला के आयोजन सचिव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम



25 अक्टूबर से 27 अक्टूबर के बीच केरल मत्स्य पालन विभाग के अधिकारियों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन प्रबंधन" पर 5 दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।



31 अक्टूबर से 3 नवम्बर के दौरान गार्डनमारी भातार, बर्दवान, पश्चिम बंगाल के 28 मछुआरों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 5 दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया और इसके अन्तर्गत उनको अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया।

3 नवम्बर से 9 नवम्बर के बीच बिहार राज्य के शेखपुरा जिले के 30 मछुआरों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिन का प्रशिक्षण



कार्यक्रम आयोजित किया गया और इसके अन्तर्गत उनको अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं जिनमें भोजन, बीमारी प्रबंधन, आर्द्रभूमि मत्स्य पालन आदि पर प्रशिक्षित किया गया।

15 नवम्बर से 19 नवम्बर के बीच ओडिशा राज्य के बालासोर जिले के 30



मछुआरों को "अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन प्रबंधन एवं विकास" पर 5 दिन का प्रशिक्षण दिया गया और इसके अन्तर्गत उनको अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन और विकास के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया।

13 नवम्बर से 14 नवम्बर के बीच पश्चिम बंगाल के दक्षिण दिनाजपुर जिले के 20 मछुआरों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन प्रबंधन" पर 2 दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया और इसके अन्तर्गत उनको अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया।

महत्वपूर्ण बैठके

- 1 नवम्बर को संस्थान के वैज्ञानिकों ने पूर्व चम्पारण जिले के जिला अधिकारी सह कलक्टर एवं कार्यकारी निदेशक, एन.एफ.डी.बी. हैदराबाद, के साथ पूर्व चम्पारण, बिहार के चार आर्द्रभूमि में "वेटलैंड विकास परियोजना" के सम्बन्ध में मोतिहारी जिले में बैठक की।
- 1-2 नवम्बर को संस्थान के वैज्ञानिकों ने कार्यकारी निदेशक, एनएफडीबी हैदराबाद, जिला मत्स्य पदाधिकारी पूर्वी चम्पारण, मोतिहारी जिले के स्थानीय अधिकारी एवं मछुआरों के साथ मिलकर बिहार राज्य के चार मन के हितधारकों के साथ बैठक की।
- 6 नवम्बर को संस्थान के वैज्ञानिकों ने कटक में ओडिशा मत्स्य विभाग अधिकारियों के साथ बैठक की।
- 7 नवम्बर को संस्थान के वैज्ञानिकों ने क्षेत्रीय मेडिकल रिसर्च सेंटर, भुवनेश्वर, ओडिशा के अधिकारियों के साथ बैठक की।
- 20 से 22 नवम्बर को संस्थान के वैज्ञानिकों ने भुवनेश्वर में संयुक्त राज्य अन्तरराष्ट्रीय वैश्विक संघ एवं विश्व मत्स्य केंद्र द्वारा आयोजित कार्यशाला "साझेदारी द्वारा पोषण संवेदी मत्स्य पालन तकनीकों और एकीकृत दृष्टिकोण का ओडिशा में प्रवर्धन" में भाग लिया।
- 21 से 24 नवम्बर को संस्थान के वैज्ञानिकों ने भा०कृ०अनु०प०-केंद्रीय मात्स्यकी प्रौद्योगिकी संस्थान एवं एशियन फिशरीज सोसाइटी, भारतीय शाखा द्वारा आयोजित मात्स्यकी और जलकृषि फोरम में भाग लिया।
- 16 नवम्बर को निकरा परियोजना के तहत मोरीगांव जिले की 47-मोराकोलोग बील के तट पर संस्थान ने असम मत्स्य विकास निगम लिमिटेड (एएफडीसी), गुवाहाटी असम के साथ मिलकर "बील मछुआरों के लिए जलवायु स्थिति स्थापक प्रौद्योगिकी के रूप में पेन संस्कृति की मान्यता" पर बैठक आयोजित की।



गंगा नदी में मत्स्य संचयन कार्यक्रम

बालागढ़, नदिया

श्रीकूल बालागढ़ मत्स्यजीवी सहकारी संस्था के सहयोग से संस्थान ने 3 नवंबर, 2017 को गंगा नदी में मत्स्य सम्वर्धन और संरक्षण के लिए नदी में मत्स्य संचयन

कार्यक्रम का आयोजन किया। डॉ० रंजन कुमार मन्ना, प्रधान वैज्ञानिक ने गंगा नदी की मछलियों को संरक्षित करने के महत्व पर एक संक्षिप्त टिप्पणी के साथ



सभी को संबोधित किया और कहा कि नदी ही जैव विविधता का प्राचीन स्थल थी, जो हाल के वर्षों में खराब हो गयी है। डॉ० बसंत कुमार दास, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान के

निदेशक और वर्तमान में चल रहे के०अ०मा०अनु०सं०-एनएमसीजी परियोजना के प्रमुख अन्वेषक ने इस परियोजना पर प्रकाश डाला और कहा कि इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य विभिन्न राज्यों में गंगा नदी के के चयनित स्थलों पर चार प्रमुख भारतीय मेजर कार्प प्रजातियों का सम्वर्धन है।

उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में मसहरी जाल के उपयोग के चलते मछली का विनाश हो रहा है और इस वजह से जलीय जैव-विविधता को भी नुकसान हुआ है। उन्होंने मत्स्य पालकों को संबोधित करते हुए कुछ महत्वपूर्ण परंपरागत मुद्दों जैसे कि मानसून के महीनों में किशोरों और बूडर का अधिक



प्रग्रहण आदि। इस अवसर पर मुख्य अतिथि, श्री असीम माजी, विधान सभा के सदस्य (बालागढ़ निर्वाचन क्षेत्र) ने संस्थान के राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन में चल रहे प्रयासों के प्रशंसा की और कहा कि "हमारी पवित्र गंगा नदी शुद्ध

और स्वच्छ रहना चाहिए"। उन्होंने गंगा नदी में कूड़े आदि को फेंकने से बचने का भी अनुरोध किया और इस बात पर प्रकाश डाला कि परंपरागत प्रथाओं को पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं होना चाहिए। श्रीमती पोपी मुस्तफी, पंचायत प्रधान, बालागढ़ ने स्थानीय मछुआरों से अनुरोध किया कि वे मत्स्य सम्वर्धन के प्रयास को सफल बनाये और मसहरी जाल के इस्तेमाल करने से बचें।

इस अवसर पर, भारतीय मेजर कार्प के लगभग 60,000 अंगुलिकाओं को नदी के मुख्य चैनल में प्रवाहित किया गया। इस कार्यक्रम में 100 से ज्यादा स्थानीय मछुआरों और उनके परिवारों ने भाग लिया।

दशाक्षामेध घाट, वाराणसी

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र इलाहाबाद द्वारा 11 नवंबर, 2017 को गंगा नदी के दशाक्षामेध घाट वाराणसी में



मछली सम्वर्धन और संरक्षण के लिए नदी में मत्स्य संचय कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के अन्तर्गत किया गया। इस अवसर पर, भारतीय मेजर कार्प के लगभग 5,000 उन्नत अंगुलिकाओं को नदी के मुख्य चैनल में प्रवाहित

किया गया। डा० आर०एस० श्रीवास्तव, केन्द्राध्यक्ष ने कार्यक्रम में भाग लेने वालों सभी मेहमानों का स्वागत करते हुए गंगा नदी की खराब पर्यावरण स्थिति के बारे में समझाया और मत्स्य जैव विविधता पर प्रतिकूल असर पड़ने के कारण मछुआरों की आजीविका पर होने वाले प्रभाव के बारे में बताया।

इस अवसर पर विभिन्न संगठनों जैसे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, यूपी कॉलेज, काशी विद्यापीठ, मत्स्य पालन विभाग, उत्तर प्रदेश और संस्थान के प्रसिद्ध सेवानिवृत्त वैज्ञानिक उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए

स्थानीय मछुआरों और बड़ी संख्या में छात्र उपस्थित थे। डॉ. बी. के. सिंह (के०अं०मा०अनु०सं०), डॉ. बी. एन. सिंह (सहायक निदेशक मात्स्यिकी यू०पी० सरकार), डॉ. राकेश सिंह (बी. एच. यू०, वाराणसी) जैसे वक्ताओं ने गंगा नदी में मत्स्य संवर्धन के बारे में अपने अनुभव, राय और सलाह साझा किया। गणमान्य लोगों ने गंगा नदी के बहुमूल्य भारतीय मेजर कार्प की संवर्धन के लिए संस्थान के इलाहाबाद केंद्र की राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन टीम के प्रयासों की बहुत प्रशंसा की।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

2 नवम्बर, 2017 को सुश्री इजर मिड्टकंडल, विज्ञान और प्रौद्योगिकी

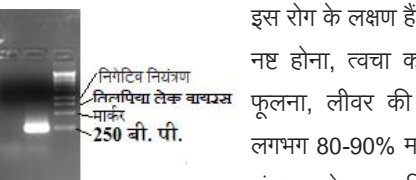


काउंसलर, रॉयल नॉर्वेजियन दूतावास, डॉ. वेल्मुर्गु पुवानेन्रन, वरिष्ठ वैज्ञानिक नोफीमा, डा. एटल मोर्टेसेन, वरिष्ठ वैज्ञानिक, नोफीमा, डॉ. जया कुमारी, वैज्ञानिक, नोफीमा, संस्थान के

निदेशक, विभागाध्यक्ष, प्रधान वेगानिक के साथ अनुसंधान परियोजना सहयोग के अवसरों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

आर टी पी सी आर और क्यू आर टी पी सी आर आधारित तिलपिया लेक वायरस पहचान किट

तिलपिया लेक वायरस विश्व के विभिन्न देशों में पाई जाने वाली बीमारी है जो तिलापिया मत्स्य पालन को प्रभावित कर रही है। संस्थान के द्वारा 2016 वर्ष में इस वायरस के भारत में पाए जाने की खबर की गई।



इस रोग के लक्षण हैं - त्वचा एवं शरीर के रंग का नष्ट होना, त्वचा का घाव, आंख एवं दिमाग का फूलना, लीवर की क्षति इत्यादि। इस रोग से लगभग 80-90% मछलियों की मृत्यु हो जाती है। संस्थान के द्वारा तिलपिया लेक वायरस पहचान

हेतु किट बनाया गया है। इसकी सहायता से जेनेटिक मटेरियल के द्वारा तिलपिया लेक वायरस की पहचान की जा सकती है।

सम्मान



डॉ. अपर्णा रॉय, वैज्ञानिक को मात्स्यिकी प्रसार शिक्षा और मात्स्यिकी प्रसार/प्रचार का नवीनतम क्षेत्र में व्यापक अनुसंधान योगदान के लिए भा०कृ०अनु०प०-केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान एवं एशियन फिशरीज सोसाइटी, भारतीय शाखा द्वारा आयोजित मात्स्यिकी और एक्वाकल्चर फोरम में श्री जे. वी. एच. दीक्षीतुलु राष्ट्रीय पुरस्कार, 2017 से सम्मानित किया गया।



श्री विकास कुमार, वैज्ञानिक एवं डा. रंजन कुमार मन्ना, प्रधान वैज्ञानिक को भा०कृ०अनु०प०-केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान एवं एशियन फिशरीज सोसाइटी, भारतीय शाखा द्वारा आयोजित मात्स्यिकी और



एक्वाकल्चर फोरम में एम. सी. नंदीसा चित्र प्रतियोगिता में प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। डा. मन्ना के चित्र का शीर्षक "बराबर योगदान: भारतीय सुंदरबन



की नदी से गिलनेट का उपयोग करते हुए मछलियों का पकड़ना" एवं श्री विकास कुमार के चित्र का शीर्षक "मछली प्रग्रहण में महिला भागीदारी (त्रिपुरा, भारत के जलकृषि तालाब से)" इसी वर्ग में श्रीमती सुवरा रॉय को उनके चित्र (प्रसरण के बाद मछली की छँटाई और श्रेणीकरण में महिला भागीदारी (सुंदरबन के तटीय क्षेत्र से) के लिए सांतवना (बेहद समृद्ध) पुरस्कार दिया गया।



डा. अमिया कुमार साहू एवं श्री धर्मेन्द्र कुमार मीणा को सोसाइटी ऑफ फिशरीज एंड लाइफ साइंस, मंगलोर ने मात्स्यिकी और जीवन विज्ञान में किये गये शानदार प्रदर्शन के लिए फेलो पुरस्कार से

भाकृअनुप-केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान एवं एशियन फिशरीज सोसाइटी, भारतीय शाखा द्वारा आयोजित 11वीं मात्स्यिकी और एक्वाकल्चर फोरम में सम्मानित किया गया।



सतर्कता जागरूकता सप्ताह का समापन समारोह

30 अक्टूबर से 4 नवंबर के दौरान संस्थान के मुख्यालय पर सतर्कता जागरूकता सप्ताह - 2017 जिसका विषय "मेरा विज्ञान - भ्रष्टाचार



मुक्त भारत" मनाया गया। दिनांक 2 नवम्बर 2017 को संस्थान के कर्मचारी ने भ्रष्टाचार उन्मूलन कार्यक्रम के तहत एक मानव श्रृंखला का आयोजन किया गया। भ्रष्टाचार और इसके प्रभावों पर जनता के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए जुलूस भी आयोजित किया गया। आउटरीच गतिविधि के तहत ग्रामीण आबादी में भ्रष्टाचार से लड़ने के संदेश प्रसार करने के लिए ग्राम अरलिया, ब्लाक बारासात, उत्तर 24 परगना में एक ग्राम सभा का आयोजन किया गया, इसमें जिले के कई किसानों और ग्रामीणों ने सक्रिय रूप से चर्चा कर भाग लिया। 3 नवम्बर को डॉ. बी. के. दास, निदेशक की अध्यक्षता में समापन समारोह आयोजित किया गया। अपने स्वागत भाषण में निदेशक ने संस्थान में



इस दल में श्री सुकुमार सरकार, श्री तासौ तयांग, श्री सोमनाथ बनर्जी, श्री वेंकटेश ठाकुर एवं श्री देवाशीश सिंह ने भाग लिया था। श्री मानवेन्द्र रॉय ने भाला फेंक में स्वर्ण पदक एवं श्रीमती सुमन कुमारी ने गोला फेंक में ताम्र पदक प्राप्त किया।

वित्तीय उन्नयन

निम्नलिखित प्रशासनिक कर्मचारी और कुशल सहायक कर्मचारी का वित्तीय उन्नयन शंशोधित सुनिश्चित करियर प्रगतन स्कीम के तहत किया गया।

क्रम सं.	कर्मचारी का नाम एवं पद	अनुदत्त लाभ
1	श्रीमती जी.विनोद लक्ष्मी, निजी सचिव	तीसरा शंशोधित सुनिश्चित करियर प्रगतन लेवल 8
2	श्री एन. डेका कु. स. कर्मचारी	तीसरा शंशोधित सुनिश्चित करियर प्रगतन लेवल 4
3	श्री एम.एल. सरकार कु. स. कर्मचारी	तीसरा शंशोधित सुनिश्चित करियर प्रगतन लेवल 4
4	श्री बी. के. साहनी कु. स. कर्मचारी	तीसरा शंशोधित सुनिश्चित करियर प्रगतन लेवल 3

स्थानन्तरण

श्री कमलेश कुमार, कुशल सहायक कर्मचारी, का स्थानन्तरण सार्वजनिक हित में मुख्यालय बैरकपुर से क्षेत्रीय केंद्र इलाहाबाद को किया गया।

सेवानिवृत्ति

इस माह संस्थान से श्री विश्व नाथ बोस, वरिष्ठ तकनीशियन, मत्स्य संसाधन और पर्यावरण प्रबंधन विभाग से सेवानिवृत्त हुए।



सम्पादक मंडल की तरफ से

अपार हर्ष के साथ हम पत्रिका का तीसरा अंक प्रस्तुत कर रहे हैं। इस दिसंबर 2017 के दौरान संस्थान में बहुत से महत्वपूर्ण कार्यक्रम जैसे भा.कृ.अनु.प. क्षेत्रीय समिति की बैठक, खाद्य एवं कृषि संगठन के साथ संयुक्त कार्यशाला, विश्व मात्स्यकी दिवस का आयोजन, कौमी एकता एवं सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन आदि सम्पन्न हुए। संस्थान के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों ने कई सम्मान एवं पदक प्राप्त किये। समस्त सम्मानित एवं विजयी वैज्ञानिकों और कर्मचारियों को असीम बधाई।

अन्त में, आप सभी को क्रिसमस और नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें।



जवाबदेही और पारदर्शिता को बढ़ावा देने के लिए शुरू किए गए विभिन्न उपायों पर प्रकाश डाला। डॉ. एस. के. नाग, संस्थान के सतर्कता अधिकारी ने सप्ताह के दौरान संस्थान में और संस्थान के बहार सतर्कता जागरूकता पर किये गये कार्यक्रमों का विवरण दिया। श्री राजीव लाल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने सतर्कता, भ्रष्टाचार और संस्थान में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए किए गए विभिन्न उपायों पर एक प्रस्तुति दी। सभा के मुख्य अतिथि श्री के. जयरामन, निदेशक, स्वामी विवेकानंद राज्य पुलिस अकादमी, पश्चिम बंगाल ने स्कूल के छात्रों और संस्थान के कर्मचारियों को पुरस्कार वितरित किया जिन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। अंत में मुख्य अतिथि ने भ्रष्टाचार और सतर्कता के मामले पर एक प्रेरक बातचीत की। सभा का अंत राष्ट्रगान के साथ हुआ।

खेल-कूद प्रतियोगिता

भा.कृ.अनु.प. क्षेत्रीय खेल कूद प्रतियोगिता 2017 (पूर्वी क्षेत्र) का आयोजन भा.कृ.अनु.प. के पूर्वी



अनुसंधान परिसर पटना में 13 से 16 नवंबर 2017 के मध्य किया गया। संस्थान से 25 खिलाड़ियों के दल ने इसमें भाग लिया। इस दल में दो महिला खिलाड़ी भी थीं।

संस्थान के खिलाड़ियों ने भाला फेंक, गोला फेंक, लम्बी कूद, ऊँची कूद, बोलीबॉल, फुटबॉल, बैडमिन्टन, टेबल टेनिस आदि प्रतियोगिता में भाग लिया। सुश्री संध्या के. एम. को सर्वश्रेष्ठ महिला एथलीट घोषित किया गया। सुश्री संध्या ने दो स्वर्ण एवं एक रजत पदक जीता तथा संस्थान की टेबल टेनिस दल ने स्वर्ण पदक जीता।



प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक, संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य एवं गणेश चंद्र संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम एवं सुनीता प्रसाद, फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2008 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत

दूरभाष: 91-33-25921190/91 फैक्स: 913325920388 ई-मेल: director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट: www.cifri.res.in